



HAJI GHULAM RASOOL KHAN

Haji Ghulam Rasool Khan is a renowned artist and master craftsman from Srinagar, Jammu and Kashmir. He has gained an international reputation through his participation in international seminars, workshops, artistic creations and collaborations etc. He is globally known for teaching the innovative art of patchwork which he revived after 700 years.

2. Born on 15th March, 1954 in a family of artists, Haji Rasool Khan is skilled into various techniques of jamawars such as Sozni, Kani, Patchwork etc. which was initially developed by him. His formal education and training has never been so rich. After his schooling, he was trained in the various techniques of jamawars under the guidance of his father; Late Shri Abdul Gaffar Khan. He revived the art of patch work, jamawar and thus got attention across the globe. He has been called for guest lecturers in various institutions across Delhi NCR. He also got a special invitation from Sookmyung Women University, Korea.

3. Haji Rasool Khan has created more than 150 new designs most of which explore two Kashmir epics, Sozni Jamawars, Kani Jamawars and Patchwork Jamawars. The warmth and comfort ability of the Jamawar has a soothing effect. These shawls are a symbol of love and purity originating from the ancient heritage of Kashmir. They are richly woven reflecting the timeless designs of Kashmir and exceptional pattern that culturally echoes the legacy. He has more than 300 skilled artisans under 10 Masters at 10 different workshops.

4. Haji Rasool Khan has received various awards and honours including Shilp Guru Award in 2012.



हाजी गुलाम रसूल खान

हाजी गुलाम रसूल खान श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर के एक प्रख्यात कलाकार और निपुण शिल्पकार हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों, कार्यशालाओं आदि में भागीदारी तथा कलात्मक कृति और संयुक्त कला सृजन भागीदारी के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा अर्जित की है। उन्हें पैचवर्क की नवान्वेषी कला सिखाने के लिए विश्वभर में जाना जाता है उन्होंने इस कला को 700 वर्ष के बाद पुनर्जीवित किया।

2. 15 मार्च, 1954 को कलाकार परिवार में जन्मे, हाजी रसूल खान, जामावार की विभिन्न तकनीकों जैसे सोजनी, कनी, पैचवर्क आदि में पारंगत हैं, जिन्हें शुरू में उनके द्वारा विकसित किया गया था। उनकी औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण बहुत अधिक नहीं रहा। अपनी विद्यालयी शिक्षा के बाद, उन्होंने अपने पिता स्वर्गीय श्री अब्दुल गफ्फार खान के संरक्षण में जामावार की विभिन्न तकनीकों में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने जामावार की पैचवर्ककला को पुनर्जीवित किया और पूरी दुनिया का ध्यान इसकी ओर आकर्षित किया। उनको दिल्ली एनसीआर के विभिन्न संस्थानों में अतिथि व्याख्याता के लिए बुलाया गया है। उन्हें सूकम्यंग महिला विश्वविद्यालय, कोरिया से भी विशेष निमंत्रण मिला।

3. हाजी रसूल खान ने 150 से अधिक नए डिजाइन तैयार किए हैं, जिनमें से अधिकांश दो कश्मीर महाकाव्यों, सोजनी जामावार, कनी जामावार और पैचवर्क जामावार का अन्वेषण करते हैं। नरम और आरामदायक जामावार से बहुत सुखद अहसास होता है। ये शॉल कश्मीर की प्राचीन विरासत से उत्पन्न प्रेम और पवित्रता के प्रतीक हैं। इनकी बुनाई बहुत बारीक होती है जिनसे कश्मीर के सदाबहार डिजाइन उभरकर सामने आते हैं और सांस्कृतिक रूप से असाधारण पैटर्न की झलक देते हैं। उनकी 10 विभिन्न कार्यशालाओं में 10 उस्तादों के अधीन 300 से अधिक कुशल कारीगर हैं।

4. हाजी रसूल खान को 2012 में शिल्प गुरु पुरस्कार सहित विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं।